an>

Title: Need to set up a 'Alha Gayan Sanskritik Kendra' at Mahoba to promote Alha, a folk song of Budelkhand region.

कँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल (हमीरपुर) ः बुंदेलखण्ड क्षेत्र आर्थिक रूप में पिछड़ा क्षेत्र है परंतु यह क्षेत्र सांस्कृतिक रूप से बहुत समृद्ध है। आल्हा गायन जो कि सैकड़ों वर्षों से मौखिक रूप से जीवित है इस क्षेत्र की विशिष्ट पहचान है। आल्हा गायन जीवन में चारित्रिक दृढ़ता की वृद्धि और जीवन में निराशा के भाव को दूर करता है। आल्हा गायन एवं श्रवण से उत्साह की अनुभूति होती है जो कि किसी राष्ट्र की कार्य ऊर्जा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह मात्र संयोग नहीं है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान "नर हो न निराश करो मन को" कविता की रचना करने वाले श्री मैथिली शरण गुप्त जी की जन्मस्थली बुंदेलखण्ड ही है। कहने का अर्थ यह है कि जीवन से निराशा दूर करने का भाव बुन्देली संस्कृति में प्राकृतिक रूप में मौजूद है और इसकी पराकाष्ठा आल्हा गायन के रूप में होती है।

आल्हा गायन संभवतः विश्व की एकमात्र ऐसी गायन शैली होगी जो कि सिर्फ मौखिक रूप में विद्यमान है और कुछ समूहों द्वारा ही इसका संरक्षण स्वयं के प्रयासों द्वारा किया जा रहा है। लोक महत्व के अति महत्वपूर्ण आल्हा गायन के संरक्षण के लिए सरकारी प्रयासों की नितांत आवश्यकता है।

अतः मैं सरकार से यह निवेदन करता हूं कि बुंदेलखण्ड की सांस्कृतिक राजधानी महोबा में आल्हा गायन सांस्कृतिक केन्द्र की स्थापना की जाये जिससे आल्हा को लिपिबद्ध किया जा सकेगा और आल्हा पर नवीन शोध संभव हो पाएंगे और इसका और अधिक विकास होगा तथा बुंदेलखण्ड में खजुराहो के साथ आल्हा भी पर्यटन विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका भी निभा पायेगा जिससे कि इस क्षेत्र की आर्थिक स्थिति में सुधार आ सकेगा।